8. चार्वाक दर्शन के अनुसार देहात्मवाद पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।

9. जैन दर्शन के अनुसार सम्यक चरित्र को स्पष्ट कीजिए।

खण्ड—स **2×14=28**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंक का है।

10. भारतीय दर्शन में आत्मा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए, उक्त सन्दर्भ में न्यायवैशेषिक मत का प्रतिपादन कीजिए।

11. कार्य कारणवाद क्या है ? प्रतीत्यसमुत्पाद का विवेचन कीजिए।

12. अद्वैतवेदान्त के अनुसार मायावाद का वर्णन कीजिए।

13. कठोपनिषद् प्रोक्त यम नचिकेता संवाद के आधार पर आत्मतत्त्व को स्पष्ट कीजिए।

SA–06

June – Examination 2023

B.A. (Part–III) Examination

SANSKRIT

वेद, उपनिषद् तथा भारतीय दर्शन

Paper : SA-06

*Time : **3** Hours]* *[Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **7×2=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1. (i) विष्णु-सूक्त के ऋषि कौन हैं ?

   (ii) विराट् पुरुष के नेत्र किसे कहा गया है ?

(iii) ऋत्विज किसे कहते हैं ?

(iv) राष्ट्राभिवर्धनम् सूक्त किस वेद का अंश है ?

(v) पूर्वमीमांसा दर्शन के प्रवर्तक कौन हैं ?

(vi) योग दर्शन के अनुसार ईश्वर का वाचक किसे कहा गया है ?

(vii) पुरोहित अभिधा से ऋग्वैदिक कौनसा देवता विभूषित है ?

खण्ड—ब **4×7=28**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 7 अंक का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** मन्त्र की सन्दर्भ-अन्वय-अनुवाद सहित व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

(अ) सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्रपात्।

स भूमिं विश्वतोवृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।

अथवा

(ब) प्र तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो न भीमो कुचरो गिरिष्ठाः।

यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा॥

3. कठोपनिषद् के अनुसार रथ दृष्टान्त का वर्णन कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** की व्याख्या संस्कृतभाषा में कीजिए :

(अ) शतायुषः पुत्रपौत्रान् वृणीष्व बहून् पशून् हस्तिहिरण्यमश्वान्।

भूमेर्महदायतनं वृणीष्व, स्वयं च जीव शरदो यावदिच्छासि।

अथवा

(ब) स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति, न तत्र त्वं न जरया बिभेति।

उभे तीर्त्वा शनायापीपासे शोकातिगो मोदते स्वर्गलोके॥

5. काल सूक्त के आधार पर काल के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

6. न्यायवैशैषिक के अनुसार ईश्वर के षडैश्वर्य को संक्षेप में समझाइये।

7. 'अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः' सूत्र की व्याख्या कीजिए।